16 अष्टिः (33)

जरजरजग [जरौ जरौ जगाविदं वदन्ति पञ्चचामरम् Jk. 2. 203] नाराच, पंचचामर, महोत्सव.

तनभतयग [तो नो भतयगकारयुतश्चेदिह बालाख्या Chm. 2. 162] बाला.

तमयरतग (4-4-4-1) [मन्दाकिनी तमयर्ता गो वेदैर्वेदयतिर्भवेत् Mm. 18. 14] मन्दाकिनी.

तजभजतग [गरुडरुतं नजौ भजतगा यदा स्युस्तदा Chm. 2. 156] गरुडरुत.

नजभजरग (7-9) [नजभजरगसंयुक्ता सप्तभिरभैश्च वाणिनी छिन्ना Mm. 18. 19] वाणिनी.

नजरभभग [नजरभभेन गेन च स्यान्मणिकल्पलता Chm. 2. 159] इन्दुमुखी, चिन्तामणि, मणिकल्पलता.

ननजसग (5-11) [कमलदलमिषुविरति नौ नजसगाश्चेत् Jk. 2. 201] कमलदल, ललितपद.

नननननग [नुगौ चलधृतिः H. 2. 268 (नु=नपञ्चकम्)] चलधृति.

नननननल [द्विगुणितवसुलघुभिरचलधृतिरिह Chm. 2. 155] अचलधृति, गीत्यार्या.

नभजजजग (4-12) गतियतिर्नभजजा ज्गिति मङ्गलमङ्गना Jk. 2. 200] मङ्गलमङ्गना.

नमजसनग (4-4-4-4) [न्मौ जस्नगाः सुललिता युगैर्युगयतिर्भवेत् Mm. 18-16] सुललिता.

नयनयसग (12-4) [नयनयसाद्गः खरखरखं चेद् भुवि कान्तम् Jk. 2. 206] कान्त.

भभभभग [पञ्चभकारयुताऽश्वगतिर्यदि चान्त्यगुरुः Chm. 2.15.8] अश्वगति, अश्वाक्रान्ता, खगति, नील, पद्ममुखी, संगत, सोपानक.

भभभसग [अष्टिभवा भक्तुष्कसगैः स्मरशरमाला Jk. 2. 198] शरमाला, स्मरशरमाला.

भरननग (7-9) [भ्रत्रिनगैर्मुनेः खमृषभगजविलसितम् Jk. 2. 202] ऋषभगजविलसित, गजवरविलसित, गजतुरगविलसित, मत्तगजविलसित.

भरनभभग (5-6-5) [भाति हि भामिनी भरनभद्वयगैर्भुवने Jk. 2. 208] भामिनी, शैलशिखा.

भरनरनग (10-6) [संकथिता भरौ नरनगाश्च धीरललिता Chm. 2. 157] धीरललिता, प्रमुदिता, महिषी, ललिता.

भरयननग (10-6) [भो रयना नगौ च यस्यां वरयुवतिरियम् Chm. 2. 161] वरयुवति.

भसमतनग (8-8) [भात्समतनगैरष्टच्छेदे स्यादिह चकिता Chm. 2. 150] चकिता.

मतसततग (4-5-7) [म्तौ स्तौ त्गौ कोमललता घडैः (घ=चतुर्; ड = पञ्च) H. 2. 285] कोमललता.

मनसतरग [म्नस्तर्गाः सुरतललिता H. 2. 280] सुरतललिता.

मभनमनग (4-6-6) म्भौ नो म्नौ गो मदनललिता वेदैः षड्तुभिः Chm. 2. 152] मदनललिता.

मममममग [यस्मिन् सर्वे गा राजन्ते ब्रह्माद्यं तद् रूपं नाम Chm. 2. 160 or मुगौ कामुकी H. 2. 266] कामुकी, ब्रह्मरूप.

यमनसरग (6-10) [जयानन्दं यान्म्नौ सुललितमृतुच्छित्सरौ गः Jk. 2. 205] जयानन्द, सुलल्ति, प्रवरललित.

रजरजरग [चित्रसंज्ञमीरितं समानिकापदद्वयं तु Chm. 2. 148] चित्र.

रजरजरल [रजौ रजौ रलौ चञ्चला Pp. 2. 172] चञ्चला, चित्रशोभा.

रननननग [नींगा ललना H. 2. 283 (नी-नचतुष्कम्)] ललना.

सजससजग [सजसाः सज़ौ ग उद्गता Bh. 32. 313] उद्गता.

सतयसभग (4-4-4-4) प्रमदा सत्यसभगा वर्णैर्वर्णयतिर्भवेत् Mm. 18-15] प्रमदा.

सभमसभग [सभमाः सभगाः स्खलितविक्रमा Bh. 16. 32] स्खलितविक्रमा.

ससननमग [सौ नौ मो गो वेल्लिता H. 2. 284] वेल्लिता.

सससससग [सुगौ कामुकी H. 2. 267 (सु-सपञ्चकं)] कामुकी, सोमडक.

17 अत्यष्टिः (21)

जसजसयलग (8-9) जसौ जसयला वसुग्रहयतिश्च पृथ्वी गुरुः Vr. 3. 88] पृथ्वी, विलम्बितगतिः.

नजजयनलग [नजजयना लगौ रुचिरमुखी Bh. 32. 175] रुचिरमुखी.

नजभजजंगग (7-10) नजभजजेषु गौ यदि वदन्ति च वाणिनीं ताम् Vr. 3. 93. 3] नर्कुटक, वाणिनी.

नजभजजलग (7-10) [हयदशभिर्नजौ भजजला सगु नर्कुटकम् P. 7. 16. 6] अवितथ, कुटक, नर्कुटक, नर्दटक.

नजभजजलग (7-6-4) [मुनिगुहकार्णवैः कृतयति वद कोकिलकम्। नर्कुटकमेव यतिभेदात् कोकिलकम् P. 7. 15. 7] कोकिलक.

नजभजभलग (12-5) [समदविलासिनी नजभजैर्भलैरिनशरैः Vr. 3. 93. 1] विलासिनी, समदविलासिनी.

नननननगग (5-12) [शरविरतिरिषुनगणगगिति वसुधारा Jk. 2. 216] वसुधारा.

ननभसरलग (7-6-4) [कथितं च घनमयूरं ननभसरलगं स्वरै रसैश्छिन्नम् Mm. 18. 25] घनमयूर.

ननमरसलग (6-4-7) [रसयुगहययुङ् नौ म्रौ सो लगौ हि यदा हरिः P. 7. 16. 4] हरि.

नसजसयलग [नसजाः सयला गो मालाधरः Pp. 2.178] मालाधर.

नसमततगग (6-4-7) [नः स्मौ तौ गौ पद्मम् H. 2. 294] पद्म.

नसममयलग (6-4-7) [नस्मम्यल्गा रोद्दिणी H. 2. 295] रोद्दिणी